



SHRI DAYA PRAKASH SINHA

Shri Daya Prakash Sinha, the doyen of Hindi theatre and playwright, is recognised as India's foremost Hindi playwright. His plays are held in high esteem by literary critics, theatre critics and academics. His plays are larger than life, timeless and rare modern-classic, theatrical interpretations of actual historical, mythology or contemporary inspired events; outstanding grand spectacles that unfurl across time. More than the passive incantation of past glory, his plays highlight India's true socio-political journey: from ancient to modern era, through exploration of legendary and poignant historical characters. They exhibit pathos and drama; aptly highlighting India's cultural ethos and elemental human sensibility.

2. Born on 2nd May, 1935, Shri Sinha received his Master of Arts degree from Allahabad University in 1956. He also obtained Diploma in Painting from Allahabad University and Masters Diploma in Public Administration from Institute of Public Administration, New Delhi. He briefly joined Allahabad University (C.M.P College) as lecturer before joining U.P Civil Service and then Indian Administrative Service. With his specialization in Cultural Administration, he was associated with the administration of several cultural institutions, both during his service tenure and after, in various capacities such as Vice President of ICCR, New Delhi; Chairman and Director, Bharat Bhavan, Bhopal; Director, Cultural Affairs, U.P. Govt.; Director, Hindi Sansthaan, Lucknow; Chairman, UP Lalit Kala Akedemi, Lucknow; Chairman, UP Sangeet Natak Akedemi, Lucknow; Director, Indian Cultural Centre, FIJI; Secretary, Sahitya Kala Parishad, Delhi; Controller, Cultural Affairs, IX Asian Games (1982), Delhi; Director, North Central Zone Cultural Centre, Allahabad etc. He is credited with building highly conducive atmosphere for the growth of a whole generation of poets, painters, writers, theatre workers and intellectuals.

3. Shri Sinha has authored thirteen full-length plays and two collections of one-act plays. Being intimately connected with the theatre as director, he is endowed with that rare insight that is necessary for any playwright. The plays authored by him are: Itihas-Chakra, Oh America, Katha Ek Kans Ki, Apne-Apne Daon, Sadar Aapka, Man Ke Bhanwer, Mere Bhai: Mere Dost, Seedhiyan, Hasya Ekanki, Samrat Ashok, Sanjh Sabera, Dushman, Itihas and Rakt-Abhishek. The appeal of his plays defies language barriers. His plays have been translated in Malyalam, Kannad, Punjabi, Odiya, Telugu, Bengali and English languages. Some of his plays are prescribed in graduate/post graduate courses of various universities. Over a dozen Research Scholars in the Hindi Departments of various universities have earned Ph.D degrees on the plays written by him. His plays are regularly staged by different theatre directors and groups in various cities of India and also abroad.

4. Shri Sinha is recipient of numerous awards and honours for playwriting. He was awarded the prestigious national Award "Akademi Award" by Sangeet Natak Akademi, New Delhi in 2001 followed by 'Sardar Vallabh Bhai Patel Award for outstanding contribution to Hindi' by Kendriya Hindi Sansthan, Agra; 'Lohia Samman' and 'Sahitya Bhushan Samman' by UP Hindi Sansthan, Lucknow; 'Urmilaa Mishra Smriti Samman' by Madhya Bharat Hindi Sahitya Sabha, Gwalior; 'Akademi Samman' by U.P. Sangeet Natak Akademy, Lucknow; 'Bhuvaneshvar Samman' by Bhuvaneshwar Shodh Sansthan, Shahjahanpur.; 'Bhavbhuti Samman' by Natyaayan, Gwalior, Madhya Pradesh.; 'Fida Husain Narsee Award' by Adarsh Kala Sangam, Moradabad, U.P.; 'Dr. Lakshmi Narain Lal Smriti Samman' by Dr. Lakshmi Narain Lal Foundation, New Delhi.; 'Lifetime Achievement Award for contribution to theatre' by Chamanlal Memorial Society, New Delhi.; 'Lifetime Achievement Award for literature' by Newsmakers Broadcasting and Communication (N.B.C), Mumbai; Pratibimb Award for Lifetime Achievement in theatre' by Pratibimb Kala Darpan, New Delhi; 'Award for Lifetime contribution to performing Arts' by Abhinay Rangmanch, Hissar, Haryana; 'Bhilwada Natya Puruskar' by Bhilawada Natya Sansthan, Rajsthan; 'Sahitya Samman' by Delhi Hindi Akademi, Delhi; "Mahatma Hansraj International Hindi Shikhar Samman" by Hansraj College, University of Delhi; "Lifetime Achievement Award for theatre" by Hindi Vishwajyoti, California, U.S.A.





श्री दया प्रकाश सिन्हा

श्री दया प्रकाश सिन्हा, हिंदी रंगमंच के पुरोधा और नाट्यकार को भारत का अग्रणी हिंदी नाट्यकार माना जाता है। साहित्य समालोचकों, रंगमंच समालोचकों और शिक्षाविदों द्वारा उनके नाटकों की काफी सराहना की जाती है। उनके नाटक असाधारण, कालातीत हैं और विरल आधुनिक–प्राचीन, विशुद्ध रूप से ऐतिहासिक, पौराणिक और समसामयिक घटनाओं और सर्वकालिक उल्लेखनीय प्रसंगों का नाट्य रूपांतरण हैं। अतीत के गौरव की आत्ममुग्धता से परे, उनके नाटक पौराणिक और मर्मस्पर्शी ऐतिहासिक चरित्रों के माध्यम से, भारत की प्राचीन से आधुनिक युग तक की सच्ची सामाजिक–राजनीतिक यात्रा का परिचय देते हैं। उनमें भारत के सांस्कृतिक लोकाचार और बुनियादी मानवीय संवेदना को उपयुक्त रूप से रेखांकित करते हुए, करुणा और नाट्यकला की अभिव्यक्ति की गई है।

2. 2 मई, 1935 को जन्मे, श्री सिन्हा ने 1956 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नाकतकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से चित्रकला में डिप्लोमा और लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली से लोक प्रशासन में मास्टर्स डिप्लोमा भी प्राप्त किया। उन्होंने उत्तर प्रदेश सिविल सेवा और भारतीय प्रशासनिक सेवा में आने से पहले इलाहाबाद विश्वविद्यालय (सी.एम.पी. कॉलेज) में लेक्चरर के रूप में कार्य किया। सांस्कृतिक प्रशासन में अपनी विशेषज्ञता के कारण, वह अपने सेवा कार्यकाल के दौरान और बाद में, विभिन्न पदों पर कई सांस्कृतिक संस्थानों के प्रशासन के साथ जुड़े रहे, जैसे आईसीसीआर, नई दिल्ली के उपाध्यक्ष; अध्यक्ष एवं निदेशक, भारत भवन, भोपाल; निदेशक, सांस्कृतिक कार्य, उप्र सरकार; निदेशक, हिंदी संस्थान, लखनऊ; अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी, लखनऊ; अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ; निदेशक, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फिजी; सचिव, साहित्य कला परिषद, दिल्ली; नियंत्रक, सांस्कृतिक कार्य, नौवें एशियाई खेल (1982), दिल्ली; निदेशक, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, इलाहाबाद आदि। उन्हें कवियों, चित्रकारों, लेखकों, रंगकर्मियों और बुद्धिजीवियों की एक पूरी पीढ़ी के लिए फलने–फूलने का माहौल तैयार करने का श्रेय भी जाता है।

3. श्री सिन्हा ने तेरह बड़े नाटक और दो एकांकी संग्रह की रचना की है। निर्देशक के रूप में, रंगमंच के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े होने के नाते, उन्हें रंगमंच की गहरी परख है जो किसी भी नाटककार के लिए आवश्यक है। उनके द्वारा लिखित नाटक हैं– इतिहास–चक्र, ओह अमेरिका, कथा एक कंस की, अपने–अपने दांव, सदर आपका, मन के भंवर, मेरे भाई: मेरे दोस्त, सीढ़ियां, हास्य एकांकी, सम्राट अशोक, सांझ सबेरा, दुश्मन, इतिहास और रक्त–अभिषेक। उनके नाटकों की अपील भाषा की दीवारों को तोड़ देती है। उनके नाटकों का अनुवाद मलयालम, कन्नड़, पंजाबी, ओडिया, तेलुगु, बंगाली और अंग्रेजी भाषा में हो चुका है। उनके लिखे हुए कुछ नाटक अनेक विश्वविद्यालयों के स्नातक/स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में पढ़ाए जाते हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों में एक दर्जन से अधिक शोधार्थी श्री सिन्हा द्वारा लिखे गए नाटकों पर पीएच.डी की डिग्रियां हासिल कर चुके हैं। विभिन्न रंगमंच निर्देशकों और समूहों द्वारा भारत के विभिन्न शहरों और विदेशों में उनके नाटकों का नियमित रूप से मंचन किया जाता है ।

4. श्री सिन्हा को नाट्य लेखन के लिए कई पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। उन्हें 2001 में संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार "अकादमी पुरस्कार" से सम्मानित किया गया था। इसके अलावा, उन्हें केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा 'हिंदी में उत्कृष्ट योगदान के लिए सरदार वल्लभ भाई पटेल पुरस्कार'; उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा 'लोहिया सम्मान' और 'साहित्य भूषण सम्मान'; मध्य भारत हिंदी साहित्य सभा ग्वालियर द्वारा 'उर्मिला मिश्रा स्मृति सम्मान' उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ द्वारा 'अकादमी सम्मान'; भुवनेश्वर शोध संस्थान, शाहजहांपुर द्वारा 'भुवनेश्वर सम्मान'; नाट्यायन, ग्वालियर, मध्य प्रदेश द्वारा 'भवभूति सम्मान'; आदर्श कला संगम, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश द्वारा 'फिदा हुसैन नरसी पुरस्कार'; डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा 'डॉ लक्ष्मी नारायण लाल स्मृति सम्मान'; चमनलाल मेमोरियल सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा 'रंगमंच में योगदान के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार'; न्यूज़मेकर्स ब्रॉडकास्टिंग एंड कम्युनिकेशन, मुंबई द्वारा' साहित्य के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार'; प्रतिबिम्ब कला दर्पण, नई दिल्ली द्वारा रंगमंच में लाइफटाइम अचीवमेंट के लिए प्रतिबिम्ब पुरस्कार; अभिनय रंगमंच, हिसार, हरियाणा द्वारा 'प्रदर्शन कला में आजीवन योगदान के लिए पुरस्कार'; भीलवाड़ा नाट्य संस्थान, राजस्थान द्वारा 'भीलवाड़ा नाट्य पुरस्कार'; दिल्ली हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'साहित्य सम्मान'; हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा "महात्मा हंसराज अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिखर सम्मान", हिंदी विश्वज्योति कैलिफोर्निया अमेरिका द्वारा "रंगमंच के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है।